Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

HAG

हाग्गै1:1–11, हाग्गै1:12–15, हाग्गै2:1–9, हाग्गै2:10–19, हाग्गै2:20–23

हाग्गै 1:1–11

कई यहूदी बाबेल से यहूदा लौट आए। उन्हें यरूशलेम में एक और मन्दिर बनाना था।

सर्वप्रथम उन्होंने अपने घरों को फिर से बनाया। फिर उन्होंने खेती करना शुरू किया। लेकिन वहां पर्याप्त वर्षा नहीं हुई। उनकी फसल पर्याप्त भोजन नहीं दे सकीं। हाग्गै ने इसका कारण समझाया। पर्याप्त वर्षा या भोजन न होना कभी-कभी परमेश्वर के न्याय के संकेत होते थे। ये वाचा के श्राप का हिस्सा थे।

हाग्गै के समय में परमेश्वर ने इन वाचा के श्रापों को यहूदियों पर आने की अनुमति दी। वाचा के श्राप तब आते थे जब परमेश्वर के लोग सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य नहीं होते थे। होशे भविष्यद्वक्ता के संदेशों में परमेश्वर ने सीनै पर्वत की वाचा को समाप्त करने की बात की थी (होशे 1:9)।

कई यहूदियों ने सोचा कि जब परमेश्वर ने उन्हें बँधुवाई में भेजा, तो उन्होंने वाचा को समाप्त कर दिया। लेकिन परमेश्वर ने वादा किया था कि वह वाचा को जारी रखेंगे। वह इसे बँधुवाई के समय के बाद जीवित बचे लोगों के साथ जारी रखेंगे। कई भविष्यद्वक्ताओं ने इसकी घोषणा की थी।

परमेश्वर अभी भी यह चाहते थे कि यहूदी बँधुवाई के बाद सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहें। इसका मतलब था कि वे वैसे ही जीवन व्यतीत करेंगे जैसा परमेश्वर ने उन्हें सिखाया था। वे दूसरों के साथ परमेश्वर के नियमों के अनुसार व्यवहार करेंगे। और वे परमेश्वर की उपासना वैसे ही करेंगे जैसे उन्होंने उन्हें मूसा की व्यवस्था में सिखाया था। क्योंकि यहूदी ये बातें नहीं कर रहे थे, इसीलिए वाचा के श्राप उन पर आ गए थे। यहूदियों को अपने तरीके बदलने और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने की आवश्यकता थी। उन्हें मन्दिर का पुनर्निर्माण करना था। इससे यह दिखेगा कि वे परमेश्वर का सम्मान करते हैं। यह दिखाएगा कि वे मानते हैं कि वे प्रभु हैं जो सब पर शासन करते हैं।

हाग्गै 1:12–15

539 ईसा पूर्व में, कुस्रू ने यहूदियों को मन्दिर का पुनर्निर्माण करने का आदेश दिया था।

536 ईसा पूर्व में यहोशू और जरुब्बाबेल ने लोगों की अगुवाई की ताकि वे मन्दिर का पुनर्निर्माण कर सकें। लेकिन उनके आसपास रहने वाले अन्य समूहों ने उन्हें निर्माण रोकने के लिए मजबूर किया। शासन और अधिकारियों ने भी लगभग 16 वर्षों तक उन्हें निर्माण रोकने के लिए मजबूर किया। यह कहानी एज्रा की पुस्तक के अध्याय 1 से 4 में दर्ज है।

मन्दिर का पुनर्निर्माण एक ऐसा विषय था जिसके लिए दानिय्येल ने प्रार्थना की थी (दानिय्येल 9:17–19)। दानिय्येल समझते थे कि मन्दिर परमेश्वर की महिमा का प्रतीक था। परमेश्वर को मनुष्यों द्वारा बनाए गए मन्दिर की आवश्यकता नहीं थी। जब पहला मन्दिर बनाया गया था तब सुलैमान ने यह स्पष्ट किया था (1 राजा 8:27)। और लोगों को परमेश्वर की आराधना करने के लिए मन्दिर की आवश्यकता नहीं थी। दानिय्येल और यहेजकेल की कहानियाँ यह स्पष्ट करती हैं। दानिय्येल और यहेजकेल ने मन्दिर के नष्ट होने के बाद बाबेल में परमेश्वर की विश्वासपूर्वक सेवा की थी।

लेकिन परमेश्वर ने चुना कि वे मन्दिर का उपयोग पृथ्वी पर लोगों के साथ अपनी उपस्थिति के संकेत के रूप में करें। यह एक संकेत था कि परमेश्वर चाहते थे कि सभी लोग उनकी उपासना करें और उनका पालन करें (यशायाह 2:1–5)। जरुब्बाबेल और यहोशू ने हाग्गै का संदेश दारा राजा के दूसरे वर्ष में सुना था। इन अगुवों ने परमेश्वर का आज्ञापालन किया। उन्होंने मन्दिर का पुनर्निर्माण जारी रखा। सभी लोगों ने भी ऐसा ही किया। वे लोग थे जो दक्षिणी राज्य के न्याय के समय के बाद जीवित बचे थे। वे ऐसा इसलिए कर सके क्योंकि परमेश्वर उनके साथ थे। इसका मतलब था कि लोग भरोसा कर सकते थे कि परमेश्वर उनके साथ मौजूद हैं। इसका यह भी मतलब था कि परमेश्वर उनकी मदद करने के लिए कार्रवाई कर रहे थे। परमेश्वर ने उनकी आत्माओं को प्रेरित किया। इसका मतलब था कि परमेश्वर ने उन्हें काम करने की इच्छा और क्षमता दी। मन्दिर के पुनर्निर्माण को जारी रखने की कहानी एज्रा के अध्याय 5 और 6 में दर्ज है।

हाग्गै 2:1–9

जो मन्दिर सुलैमान राजा के शासनकाल में बनाया गया था, वह भव्य और अद्‌भुत था (1 इतिहास 29:1)।

दूसरा मन्दिर उतना सुंदर नहीं था। और इसे बनाने वाले लोगों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। कुछ फारसी अधिकारियों ने उनके काम को रोकने की कोशिश की थी। इस कहानी का वर्णन एज्रा अध्याय 5 में किया गया है।

हाग्गै ने एक आशा का संदेश दिया ताकि जरुब्बाबेल, यहोशू और लोगों को प्रोत्साहित किया जा सके। उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं थी। वे मजबूत हो सकते थे क्योंकि परमेश्वर का आत्मा उनके साथ था। यह पवित्र आत्मा का एक और नाम है। जब इस्राएल के लोग मिस्र से निकले थे, तब आत्मा उनके साथ था। उस समय परमेश्वर ने उन्हें बँधुवाई से बचाने के लिए कई आश्चर्यकार्य किए थे। उन्होंने अपने लोगों के लिए फिर से महान कार्य करने का वादा किया था। इसका अर्थ यह था कि वे आकाश और पृथ्वी को हिला देंगे। परमेश्वर हर संभव कार्य करेंगे कि यहूदी लोग मन्दिर का निर्माण पूरा कर सकें।

दारा इस कार्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर का उपकरण था। दारा का एक महत्वपूर्ण पत्र एज्रा अध्याय 6 में दर्ज है। इसने दिखाया कि दारा ने यहूदियों को मन्दिर का निर्माण जारी रखने की अनुमति दी। उन्होंने सुनिश्चित किया कि उनके पास सभी आवश्यक सामग्री हो।

हाग्गै ने मन्दिर में महिमा, सुंदरता और शांति के बारे में भविष्यद्वाणी की थी। इनमें से कुछ भविष्यद्वाणियाँ हेरोदेस महान के समय में पूरी हुईं। उनके निर्माण परियोजनाओं ने दूसरे मन्दिर को बड़ा और अद्‌भुत बना दिया (मरकुस 13:1)। यहूदियों को समझ में आ गया कि भविष्यद्वाणियाँ भविष्य के किसी समय के बारे में थीं। वे नई सृष्टि में पूरी होंगी।

हाग्गै 2:10–19

हाग्गै का तीसरा संदेश मन्दिर का पुनर्निर्माण कर रहे लोगों के हृदयों के बारे में था। परमेश्वर ने चेतावनी दी कि वे दूसरे मन्दिर को अशुद्ध बना रहे थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि लोग स्वयं अशुद्ध थे।

इसका मतलब यह नहीं था कि उन्हें अपने शरीर से गंदगी धोने की जरूरत थी। इसका मतलब यह था कि वे उस तरीके से जीवन व्यतीत नहीं कर रहे थे जैसा परमेश्वर ने उन्हें सिखाया था। जब परमेश्वर के लोग मूसा की व्यवस्था के अनुसार नहीं जीते थे, तो उन्हें अशुद्ध माना जाता था।

परमेश्वर ने उन्हें ध्यानपूर्वक विचार करने के लिए आमंत्रित किया। परमेश्वर चाहते थे कि उनके लोग अपने विचारों, शब्दों और कार्यों पर ध्यान दें। वे चाहते थे कि वे बुराई से दूर हो जाएं और अपने पाप से पश्चाताप करें।

परमेश्वर चाहते थे कि वे उनसे प्रेम करें और पूरे मन से उनकी आज्ञा का पालन करें (व्यवस्थाविवरण 6:5)। जब परमेश्वर के लोग ऐसा करते थे, तो उन्हें शुद्ध माना जाता था। इसका अर्थ था कि वे सीनै पर्वत की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य थे। इससे वे लोग वाचा की आशीषें प्राप्त करने में सक्षम होते थे।

हाग्गै 2:20–23

हाग्गै का चौथा संदेश जरुब्बाबेल के लिए आशा का संदेश था। यह दिखाता था कि परमेश्वर के पास सभी मानव शासनों पर अधिकार है। परमेश्वर सब पर राज्य करते हैं। कई राज्य ऐसे हैं जो मनुष्यों द्वारा संचालित होते हैं जो इसे नहीं मानते। परमेश्वर ने वादा किया कि वे उनके खिलाफ न्याय लाएंगे और उन्हें नष्ट कर देंगे।

लेकिन परमेश्वर ने जरुब्बाबेल से कुछ बहुत अलग वादा किया। जरुब्बाबेल परमेश्वर के सेवक थे। परमेश्वर ने उन्हें चुना। जरुब्बाबेल परमेश्वर की राजकीय मुहर वाली अंगूठी के समान थे। राजकीय मुहर एक छाप थी। यह दिखाता था कि जरुब्बाबेल को परमेश्वर से शासक होने का अधिकार प्राप्त था।

ये वादे परमेश्वर के दाऊद के साथ वाचा के बारे में थे। उन्होंने दिखाया कि परमेश्वर ने दाऊद के साथ अपनी वाचा को जरुब्बाबेल के माध्यम से जारी रखा। जरुब्बाबेल कभी यहूदा या इस्राएल का राजा नहीं बना। न ही उनके वंश में से कोई बना।

यहूदियों ने समझा कि हाग्गै का संदेश मसीहा के बारे में एक भविष्यद्वाणी थी। नए नियम के लेखकों ने समझा कि यह यीशु के बारे में एक भविष्यद्वाणी थी। जरुब्बाबेल यीशु के वंश में से थे (मत्ती 1:12–13)।